I2OR Impact Factor : 3.015

ISSN : 2395 - 5104

शब्दार्णव Shabdarnav

International Peer Reviewed Referred Journal of Multidisciplinary Research

Year 7 Vol. 14, Part-II July-December, 2021

Scientific Research
Educational Research
Technological Research
Literary Research
Behavioral Research

Editor in Chief
DR. RAMKESHWAR TIWARI

Executive Editors
DR. KUMAR MRITUNJAY RAKESH
MR. RAGHWENDRA PANDEY

Published by
SAMNVAY FOUNDATION
Mujaffarpur, Bihar

- शिक्षाक्षेत्रे कौटिल्यार्थशास्त्रे निहितमनोवैज्ञानिकतत्त्वानामध्ययनम् 145–151
  भूपेन्द्र कुमार मिश्र
- श्रीमद्भगवद्गीतायां योगः 152–155
  दीपक मिश्रा
- भाषा और साहित्य में उच्चशिक्षा : समाचार साधन 156–157
  डॉ0 वी0 सुधा
- धर्म और समाज : एक दार्शनिक विमर्श 158–162
  डॉ0 वन्दना
- भारतीयभाषाणां सम्पोषिका राष्ट्रियशिक्षानीतिः 2020 163–166
  डॉ0 दिवाकरमिश्र
- कल्याणकल्लोलनामकग्रन्थे प्राकृतशब्दप्रयोगसमीक्षणम् 167–170
  डॉ0 रीना देवी
- 'कूहा'– रसाभिव्यञ्जना एवं शिल्प की दृष्टि से एक अवलोकन 171–175
  डॉ0 वन्दना रुहेला
- प्राणायाम का स्वरूप एवं लाभ 176–179
  डॉ0 विभूति नाथ झा
- रसस्वरूपम् रसोपकरणानि च 180–183
  दुर्गाप्रसाद भट्टराई
- मीमांसाशास्त्रे गुणतत्त्वविमर्शः 184–189
  ईश्वर आखली
- अफ़गानिस्तान में हिन्दी भाषा की स्थिति पर एक दृष्टिकोण 190–193
  ज़बीहुल्लाह फ़िक्री
- ख्यातिस्वरूपनिरूपणम् 194–198
  लक्ष्मीप्रसादगौतमः
- वेदान्ते मौलिकाः सिद्धान्ताः 199–202
  मानसकुमारबेहेरा
- समानता का सम्प्रत्यय : महात्मा गाँधी के विशेष सन्दर्भ में 203–206
  निशा सैनी
- श्रीमद्भगवद्गीतायाः अद्वैतप्रस्थाने साध्यसाधनविमर्शः 207–209
  प्रशान्तः
- जनसंचार माध्यमों का युवाओं पर प्रभाव 210–214
  रमा देवी व डॉ0 रामजी प्रसाद
- न्यायाभिमतसंक्षेपेण षोडशपदार्थविचारः 215–218
  रश्मिताजेना
- ऋग्वेदे स्तोत्रकाव्यस्य स्वरूपम् 219–221
  रोशनलाल
- शास्त्रान्तरेषु सन्धितत्त्वस्योपयोगः 222–225
  Soumyadipta Sen
- आधुनिक महाराष्ट्र में हुए भाषाशास्त्रीय अध्ययनों का सर्वेक्षण 226–232
  सोपान
- काश्मीर शैव दर्शन में योग 233–238
  सुधीर रणदेव
- पण्डितगोविन्दचन्द्रमिश्रस्य अथ कात्यायनी नाटके दर्शनतत्त्वानुशीलनम् 239–245
  तिलोत्तमा नायक

भाषा और साहित्य में उच्चशिक्षा : समाचार साधन

डॉ. वी. सुधा*

सामान्य रूप से सबको दी जानेवाली शिक्षा से ऊपर किसी विषय या विषयों में विशेष, विशद तथा सूक्ष्म शिक्षा के उस स्तर का नाम है उच्चशिक्षा यह विश्वविद्यालयों, व्यावसायिक, कम्यूनिटी, महाविद्यालयों प्रौद्योगिकी संस्थानों आदि के द्वारा दी जाती है। इसके अन्तर्गत स्नातक, परस्नातक, व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण आदि आते हैं। भारतीय गुरुकुलों में उच्चशिक्षा का विशेषस्थान है। गुरुकुलों में प्रारंभिक शिक्षा से उच्चतम शिक्षा तक दी जाती है। सबसे ऊपर कक्षा के छात्र अपने से नीचे कक्षा के छात्रों को पढाते थे और वे अपने से नीचे कक्षावाले को। इन गुरुकुलों में वेद, वेदांग दर्शन, नीतिशास्त्र, इतिहास, पुराण, धर्मशास्त्र, दंडनीति आदि सभी विषयों में उच्चतम शिक्षा दी जाती है। कुछ बडे गुरुकुलों में कुलपति और अधिक संख्या में विद्वान भी मैजूद हैं। विश्व में अच्च शिक्षा में भारत तृतीय स्थान पर है।

आज का युग वैज्ञानिक युग है। बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए नये-नये आविष्कार होते जा रहे हैं। मानव-कलयाण हेतु सुविधाओं की प्रगति भी हो रही है। दिन-ब-दिन पढ़े-लिखे लोगों की संख्या बढ़ती जा रही है। नौकरी करनेवाले स्त्री-पुरुषों की संख्या भी बढ़ रही है। अधिकांश लोग उच्चशिक्षा के लिए तकनीकी विधा को स्वीकार करना चाहते हैं। अधिक तनखाह देनेवाले बहुराष्ट्रीय कंपनियों(Multinational Companies) में काम करना चाहते हैं। इसकेलिए आवश्यक इंजनीरिंग, एम.बि.ए. कम्प्यूटर जैसे विषयों में उच्चशिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं। भाषा या साहित्य को उच्चशिक्षा के रूप में चुननेवालों की संख्या बहुत कम हो गयी है। फिर भी अन्य विषयों की तरह भाषा और साहित्य के लिए खास विशेषता है।

भाषा वह साधन है, जिसके द्वारा हम अपने विचारों को व्यक्त करते हैं। इसकेलिए हम वाचिक ध्वनियों का प्रयोग करते हैं। भाषा के माध्यम से हम अपनी मन की बात को स्पष्ट प्रकट करते हैं। भाषा के माध्यम से भावों का आदान-प्रदान होता है। भाषा एक सुसम्बद्ध और सुव्यवस्थित योजना है। विकास की प्रक्रिया में भाषा का महान उत्तरदायित्व है। ऐसी भाषा मनुष्य को ही प्राप्त एक विशेष अधिकार है। भाषा की महानता के बारे में भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने कहा:

'निज भाषा उझति अहैं, सब उन्नती को मूल ।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल ।।'

भाषा-ज्ञान की वृद्धि के लिए उसका साहित्य पढना आवश्यक है। माना जाता है कि साहित्य जीवन का अमृत है। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी ने साहित्य की आवश्यकता को समझाते हुए कहा- "यदि हम जीवित रहना है और सभ्यता की दौड में अन्य जातियों की बराबरी करना है, तो हमें श्रमपूर्वक बडे उत्साह से सत्साहित्य का उत्पादन और प्राचीन साहित्य की रक्षा करनी चाहिए।"

भारत एक लोकतांत्रिक राज्य है। स्वतंत्र भारत में सभी को अपने विचारों को स्पष्टकरने की स्वतंत्रता है। मानव में सुंदर अभिव्यक्ति ही साहित्य है। साहित्य में बदलते हुए मूल्य, मानव-जीवन परिवेश, मानव की सहज अनुभूतियाँ, सामाजिक स्थितियाँ आर्थिक, धार्मिक और सांस्कृतिक विशेषताओं की अभिव्यक्ति होती है। साहित्य समाज की प्रतिध्वनि प्रतिच्छाया और प्रतिबिम्ब है। इसलिए आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने कहा-साहित्य समाज का दर्पण है।" किसी देश के, किसी समय का वास्तविक रूप हम देखना चाहते हैं, तो वह देश के तत्कालीन साहित्य पठन से ही संभव है। साहित्य पठन से मानव विकास भी संभव है। भाषा और साहित्य क्षेत्र में उच्चशिक्षा प्राप्त करने में समाचार पत्र मुख्य भूमिका निभाते हैं। साहित्यिक शिक्षा के क्षेत्र में समाचार पत्र, रेडियो, दूरदर्शन और इंटरनेट का बड़ा योगदान है। इसमें पत्रकारिता भाषा-विकास का बुनियाद माना जाता है। वर्तमान युग में हिन्दी विश्वभाषा-स्तर तक पहुँच गयी। भाषाएँ संस्कृति की वाहक होती है। समाज के बदलते सच को हिन्दी भाषा ने उजागर किया। इसलिए वर्तमान डिजिटल युग में अंग्रजी भाषा के अलावा हिन्दी की माँग अधिक बढ़ गयी है। इसकारण उच्चरिक्षा के अंतर्गत हिन्दी भाषा या साहित्य

*हिन्दी विभाग, आन्ध्रा विश्वविध्यालय, विशाखपट्टनम

पर आधारित प्रशिक्षण केलिए हिन्दी पत्र-पत्रिकाएं रेडियो- समाचार, हिन्दी दूरदर्शन आदि बहुत सहायक सिद्ध होते है। हिन्दी भाषी और हिन्दीतर भाषा-भाषी पत्रकारों ने पूर्ण रूप से हिन्दी भाषा के विकास में अपना योगदान दिया। भारतेन्दु हरिश्चंद्र, धर्मवीर भारती, आलूरि बेरागि, आचार्य जि. सुंदररेड्डी जैसे महान साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं के साथ पत्रकारिता में भी अपनी प्रतिभा को दर्शाया। साहित्यकार अपनी रचनाओं के माध्यम से समकालीन सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और धार्मिक विचारों को शासवत रूप में अभिव्यक्त करते हैं। पत्र-पत्रिकाओं में शिक्षा संबंधी समाचार, विभिन्न क्षेत्रों के विषय में जानकारी, विज्ञान, अध्यात्म और राजनीति से संबंधित कार्यक्रमों का सजीव चित्रण किया जाता है। इसकारण उच्चशिक्षा प्रशिक्षण में पत्रकारिता अधिक लाभान्वित माना जाता है।

समाचारपत्र एक ऐसा माध्यम है, जिससे मानव हर दिन देश-विदेशों में होनेवाली घटनाओं का समाचार घर में बैठकर आद्यंत जान सकता है। इससे सभी प्रकार के शिक्षा-संबंधित समाचार उपलब्ध होता है। इसमें समाचार मुद्रित रूप में, चित्रों के साथ सुरक्षित रूप में रखा जा सकता है। आज का युग डिजिटल युग है। हमें अन्य विषयों की तरह भाषा और साहित्यिक विषयों को भी कंम्प्यूटर, स्मार्टफोन और बाकी तकनीकी डिवाइस पर उपलब्ध है। इनके द्वरा भाषा और साहित्य से संबंधित सभी प्रकार के सामग्री को हम पढ़ सकते हैं, सुन सकते हैं और देख सकते हैं। इनके अलावा रेडियो से भी हम भाषा और साहित्य संबंधी अमूल्य समाचार सुन सकते हैं। दूरदर्शन एक ऐसा माध्यम है, जिससे हम सुनने के साथ देख भी सकते हैं। साहित्य और संस्कृति अन्योन्याश्रित हैं। साहित्य के बिना संस्कृति का और संस्कृति के बिना साहित्य की प्रगति संभव नहीं है। साहित्य पठन से हम उस देश की संस्कृति की गरिमा को समझ सकते हैं। उच्चशिक्षा के अन्तर्गत भाषा और साहित्य पढ़नेवालों के लिए पूरे विश्व की संस्कृति की जानकारी लेना अवश्य है। समाचार साधनों से हम उच्चशिक्षा के लिए आवश्यक सामग्री को पाने की संभावना है। समाचार-साधन मामव की ज्ञान-विज्ञान की अभिवृद्धि के लिए सहायक सिद्ध होते हैं। समय के अनुसार उनमें भी नये-नये आविष्कार हो रहे हैं, जो आम आदमी के लिए भी बहुत उपयोगी हैं।

सहायक ग्रंथ सूची:

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ. नगेन्द्र
2. हिन्दी निबन्ध - आर. एन. गौड, जे. मिश्रा
3. भाषा विज्ञान - भोलानाथ तिवारी